राशि, नक्षत्र और अंक ज्योतिष के बारे में जानकारियां

राशि के बारे में जानकारी

राशि क्या है ?

जिस प्रकार भूमि को अनेक भागों में विभक्त कर भूगोल की शिक्षा सुगमता से दी जाती है, उसी प्रकार खगोल को भी 360 कल्पित अंशों में विभाजित किया गया है। राशि वास्तव में आकाशस्थ ग्रहों की नक्षत्रावली की एक विशेष आकृति व उपस्थिति का नाम है।

आकाश में न तो कोई बिच्छू है और न कोई शेर, पहचानने की सुविधा के लिए तारा समूहों की आकृति की समता को ध्यान में रखकर महर्षियों ने परिचित वस्तुओं के आधार पर राशियों का नामकरण किया है।

जन्मराशि या नाम राशि

ज्योतिष प्रेमियों के साथ दूसरी बड़ी समस्या यह है कि वे जन्म राशि देखें या नाम राशि? वैसे व्यक्ति विशेष के जीवन का पूरा विवरण एवं जानकारी तो उसकी जन्मपत्रिका के द्वारा ही संभव है परन्तु मोटे तौर पर जन्मकालीन चन्द्रमा का पता लगाने पर ही किसी व्यक्ति के चरित्र, गुण व गतिविधि के बारे में बहुत कुछ बताया जा सकता है। कई व्यक्ति इस चक्कर में रहते हैं कि राशि कौन-सी प्रधान मानें जन्म राशि अथवा चालू नाम राशि।

इसके लिए ज्योतिष शास्त्र निर्देश देता है कि विद्यारम्भ, विवाह, यज्ञोपवीत इत्यादि मूल संस्कारित कार्यों में जन्म राशि की प्रधानता होती है। नाम राशि पर विचार न करें परन्तु घर आने-जाने पर, गांव प्रस्थान व यात्रादि पर, खेत-फर्म, फैक्ट्री इत्यादि के उदघाटन व समापन पर तथा यज्ञ, पार्टी व व्यापार कर्मों तथा दैनिक कार्यों में नाम राशि प्रधान है जन्म राशि नहीं।

चन्द्र राशि

इस राशिवली को ठीक से पहचानने के लिए समस्त आकाश-मण्डल की दूरी को 27 भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग का नाम एक-एक नक्षत्र रखा। सूक्ष्मता से समझने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग किए, जो चरण कहलाते हैं। चन्द्रमा प्रत्येक राशि में तथा दो दिन संचरण करता है।

उसके बाद वह अलग राशि में पहुँच जाता है। भारतीय मत से इसी राशि को प्रधानता दी जाती है। अर्थात, चन्द्र जिस राशि में विराजित हो उसे ही जातक की राशि माना जाता है।

सूर्य राशि

वर्तमान समय में राशिफल से संबंधित अधिकांश पुस्तकें पाश्चात्य ज्योतिष के आधार पर सूर्य, राशि को प्रधानता देते हुए प्रकाशित की जाती हैं, जिस प्रकार भारतीय ज्योतिषी चन्द्र राशि को ही जातक की जन्म राशि मानते हैं और उसे प्रमुख महत्व देते हैं, उसी प्रकार पाश्चात्य ज्योतिर्विद जातक की सूर्यराशि को अधिक महत्व देते हैं।

कैसे जानें अपनी राशि

शब्दों का हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है, इन शब्दों का आधार अक्षर होता है, ज्योतिष में हमारे नाम से जुड़े अक्षरों के पीछे कुछ कारण हैं, जिनका जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

ज्योतिष शास्त्र में 12 राशियां बताई गई हैं, सभी राशियों के लिए अलग-अलग नाम अक्षर निर्धारित किए गए हैं, कुंडली के अनुसार यदि किसी व्यक्ति का नाम रखा गया है, तो उसके नाम का पहला अक्षर जैसा होता है, वैसी ही उसकी राशि मानी जाती है, अपने नाम के पहले अक्षर से अपनी राशि कैसे ज्ञात कर सकते है, इसके बारें में आपको विस्तार से बता रहे है।

1.मेष

मेष राशि का चित्र भेड़ के समान होता है, इस राशि के लोगों के नाम का पहला अक्षर चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ से आरंभ होते हैं ।

2.वृष

इस राशि में बैल का चित्र दिखाई देता है, इस राशि के लोगों के नाम का पहला अक्षर ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो से प्रारंभ होते हैं ।

3.मिथुन

इस राशि में नारी व पुरुष का युग्म, नारी के हाथ में वीणा और पुरुष के हाथ में धारण किए हुए चिन्ह होते हैं, मिथुन राशि के लोगों के नाम का पहला अक्षर का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह से आरंभ होता है ।

4.कर्क

इसका स्वरूप केकड़े के समान होता है, इन लोगों का पहला अक्षर ही, हू, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो से प्रारंभ होता है ।

5.सिंह

इस राशि में सिंह की आकृति दिखाई देती है, इस राशि के लोगों के नाम का पहला अक्षर मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे से प्रारंभ होते हैं ।

6.कन्या

इस राशि के स्वरूप में एक लड़की नौका में बैठी हुई दिखाई देती है, जिसके हाथ में धान व अग्नि होती है, कन्या राशि में नाम का पहला अक्षर ढो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो होता है ।

7.तुला

इस राशि के चित्र में एक पुरुष हाथ में तराजू लिए दिखाई देता है, इन लोगों का पहला अक्षर र, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते अक्षर से आरंभ होनें वाले नाम तुला राशि के माने जाते हैं ।

8.वृश्चिक

इसका रूप बिच्छू के समान रहता है, इस राशि के लोगों के नाम का पहला अक्षर तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यि, यू से शुरू होता है |

9.धनु

इस राशि का स्वरूप में हाथ में धनुष लिए एक पुरुष दिखाई देता है, साथ ही घोड़ा भी दिखाई देता है, इस राशि के लोगों के नाम का पहला अक्षर य, यो, भा, भि, भू, ध, फा, ढ, भे से प्रारंभ होता है ।

10.मकर

इसका मृग यानि हिरण के समान मुख वाला स्वरूप होता है, भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी अक्षर मकर राशि के होते है ।

11.कुंभ

इसका स्वरूप में कंधे पर कलश लिए एक पुरुष दिखाई देता है, कुंभ राशि के लोगों के नाम का पहला अक्षर गू, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द से आरंभ होता है ।

12.मीन

इस राशि में दो मछलियां एक के मुख पर दूसरे की पूंछ लगकर गोल बनी हुई दिखाई देती है, दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची अक्षर के नाम वाले लोग मीन राशि के माने जाते है ।

राशियों से सम्बंधित जानकारी

मेष राशि

मेष राशि की प्रकृति :

मेष राशि राशि चक्र की सबसे पहली राशि हैं।आप मजबूत और शक्तिशाली विशेषताओं के अधिकारी हैं। आपके अन्दर अपने लक्ष्य को पाने का प्रयोजन हैं और आप मजबूत भावना के साथ आगे बढ़ते हैं।

आपके पास ऊर्जा का असीमित भंडार हैं जो आपको आसानी से थकने नहीं देता हैं। साहस आपकी सबसे बड़ी खूबी है,और आपको नेतृत्व करने में मजा आता हैं, जबकि आपके आस पास के लोग आपके दिखाये गये मार्ग पर चलना पसंद करते हैं।

आपका व्यवहार स्पष्ट और सीधा होता है, और आप समस्या का सीधे-सीधे सामना करने पर विश्वास करते हैं बजाय कि शुतुरमुर्ग की तरह सिर छुपाने के। आप त्वरित कार्रवाई के लिए तैयार रहते हैं पर कभी-कभी आवेगी होने की वजह आप गुमराह किए जा सकते हैं।

मेष नक्षत्र

अश्विनी नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव अश्विनी कुमार और स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक उत्साही और उमंगवान होते हैं। सृजनात्मक कार्य करते हैं। इस राशि और इस नक्षत्र में जन्म लेने वालों का शारीरिक और मानसिक विकास अच्छा होता हैं। इस नक्षत्र का स्वामी केतु होने के कारण इनका काम अचानक बनता है या बिगड़ता है। ये क्रोध ज्यादा करते हैं। ये आर्युवेद में विश्वास करते हैं।

भरणी नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव यमराज और स्वामी शुक्र है। इस राशि के दुर्गुणों कि वजह से इन्हे क्रोध ज्यादा आता है और शारीरिक सुख मे रुचि रहती है। नक्षत्र का स्वामी शुक्र होने कि वजह से ये विलासी प्रवृत्ति के होते है।संबधों का कारक शुक्र होने की वजह से संबंध बिगड़ते नही है। या तो अधिक दोस्त होते है या कम मित्रोंसे गहरी दोस्ती होती है। त्वचा पर चमक पायी जाती है। यदि कामप्रवृत्ति घटती है तो चेहरे की चमक और बढ़ती है।

कृतिका नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव अग्नि है और स्वामी सूर्य है। सृजनात्मक और संशोधनात्मक प्रवृत्ति पायी जाती है। इनमे प्रशंषा पाने कि इच्छा होती है। ये दुसरों को माफ़ करने पर विश्वास करते हैं। इनका मन योग और ध्यान में लग जाए तो कामवृत्ति घटती है और मोक्ष प्राप्ति हो सकती है। छेड़ने पर अतिशय क्रोध करते है। ये सत्ता हासिल कर पाते है।

मेष राशि तथ्य

भाग्यशाली दिन : मंगलवार

भाग्यशाली संख्या : 9, 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

भाग्यशाली रंग : सुर्ख लाल रंग और लाल

भाग्यशाली स्टोन : हीरा, रूबी

स्वामी ग्रह : मंगल ग्रह

सकारात्मक गुण : उद्यमी, तीक्ष्ण, बहादुर, सक्रिय, साहसी ऊर्जावान।

नकारात्मक गुण: अधीर, अविवेकी, स्वार्थी, ईर्ष्यालु, व्यर्थ घमंडी, अहंकारी, मोटे, क्रूर, स्वत्वबोधक, हिंसक

स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं : मेष राशि के लोगों में बहुत जल्दी सेहत में सुधार होता हैं। उनकी ऊर्जा के स्तर मे कभी कभी व्यापक रूप से उतार चढ़ाव होते रहता हैं और इसलिए इन्हे अपने आहार का ख्याल रखना चाहिए है। इन्हे कॉफी और चीनी से बचना चाहिए। इन पदार्थों से उन्हें तनाव हो सकता हैं।

वृषभ राशि

वृषभ राशि की प्रकृति :

आप राशिचक्र की दूसरी राशि हैं। वृषभ इस राशि का प्रतीक हैं।वृषभ सत्ता और ताकत का प्रतिनिधित्व करता हैं। प्रतीक से आप को भ्रमित न हों आप नरम और परिष्कृत स्वभाव के भी हो सकते हैं। आप विनम्र रहते हैं जब तक कि आपको छेड़ा ना जाये या उकसाया ना जाय।

आपको अपने संकल्प के लिए भी जाना जाता हैं, आपको कोई भी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकता हैं। आप अपने जीवन में सादगी और स्थिरता को ज्यादा महत्व देते हैं। जिससे आप के आसपास के दूसरे लोग आपको उबाऊ और निरुत्साह समझ सकते हैं।

आप अनावश्यक जोखिम उठाने से मना कर देते हैं यदि आपकी स्थिरता ख़तरे में पड़ी हो तो।आप अपने आराम को बहुत महत्व देते हैं और आप भौतिकवादी हो सकते हैं लेकिन आपका यह गुण आपको एक व्यावहारिक दृस्टीकोण हैं। हालांकि आपको वास्तव में बहिर्मुखी नहीं कहा जा सकता हैं, फ़िर भी आप एक बहुत अच्छे दोस्त साबित हो सकते हैं जो रक्षक और गाइड की भूमिका निभा सकता हैं।

वृषभ नक्षत्र

कृतिका नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव अग्नि है और स्वामी सूर्य है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक उत्साही और उमंगसे भरपूर होते है। इनमें स्वार्थवृत्ति नहीं पायी जाती है। ये महत्वकांक्षा बहुत होती है और सत्ता का शौक होता है।

रोहिणी नक्षत्र:

इस नक्षत्र के देव ब्रम्हा और स्वामी चंद्र हैं। इन जातकों में ममत्व, लगनशीलता, कल्पनाशीलता और मौलिकता पायी जाती है। इनके साथ साथ स्वार्थवृत्ति भी इनमे ज्यादा होती है। गुस्सा होने पर भी चेहरे पर गुस्सा नही दिखता है।

मृगशीर्ष नक्षत्र:

इस नक्षत्र के देव चंद्र और स्वामी मंगल है। कृतिका नक्षत्र जातकों से कम में स्वार्थवृत्ति पायी जाती है। उत्साही होते है। जो काम हाथ में लेते हैं उसे पूरा कर के ही छोड़ते हैं। नेतृत्व करने और छोटे होते हुए भी बड़प्पन दिखाने आदि कार्यो में आनंद आता है। जितना शीघ्र ये उत्साहित होते हैं उतना ही शीघ्र हताश भी हो जाते है।

वृषभ राशि तथ्य

भाग्यशाली दिन: शुक्रवार, सोमवार

भाग्यशाली संख्या: 6, 15, 24, 33, 42, 51

भाग्यशाली रंग: नीला,नीला हरा

भाग्यशाली स्टोन : मरकत,फ़िरोजा

स्वामी ग्रह : शुक्र

सकारात्मक गुण: व्यावहारिक, कलात्मक, स्थिर, भरोसेमंद, उदार, इंसानियत और वफादार

नकारात्मक गुण: आलसी, जिद्दी, पक्षपातपूर्ण, स्वत्वबोधक

स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं : गले की तकलीफ़ होने की प्रवृत्ति हो सकती हैं। अन्य बीमारियां जैसे टांसिल, मोटापा और घेंघा शामिल हो सकते हैं। मांसपेशियों में तनाव और सूजन पीड़ादायक गर्दन की मांसपेशियां आदि तकलीफ़ भी हो सकता हैं।

मिथुन राशि

मिथुन राशि की प्रकृति :

आपकी राशि का चिह्न जुड़वां हैं जो आपकी प्रकृति में द्वंद्व को बताता हैं। आपके व्यवहार की यह विसंगति आपको दूसरों से अलग करता हैं। उदाहरण के लिए, एक दिन यदि आप एक बात के लिए पसंद बता रहे हैं तो हो सकता हैं अगली बार आप विपरीत बात कहें।

आप एक ही समय में प्यार और नफरत महसूस कर सकते हैं। वास्तव में, कभी कभी आपके लिए इन दो भावनाओं में भेद करना मुश्किल हो जाता हैं। यह न केवल आपको भ्रम में डाल देता हैं अपितु आपके आस पास रहने वाले भी भ्रमित हो जाते हैं। यह आपके निर्णय को भी प्रभावित करता हैं।

और आप अंत में अपने दुश्मन के शुभचिंतक की तरह सोचने लगते हैं। हालांकि, आपको अंतर्दृष्टि की शक्ति भेंट में मिली हुई हैं।हो सकता हैं आप इससे अनजान हों।लेकिन जब आपको इसके बारे में पता चलता हैं, तो आप इसका दुरुपयोग कर सकते हैं। आप एक अच्छे वार्तालापकार, एक अच्छे वक्ता और बहुत मजाकिया हो सकते हैं जिससे आपके कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं।

मिथुन नक्षत्र

मृगशीर्ष नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव चंद्र और स्वामी मंगल है। उत्साही और मेहनत करने वाले होते हैं। इन जातकों में कूटनीति के कम गुण पाए जाते हैं। पुरुष जातको में संपूर्ण पुरुषत्व और स्त्रियों में संपूर्ण स्त्रित्व के गुण पाए जाते है।आत्मविश्वास पाया जाता है। अपने लक्ष्य को हासिल करने

के लिये मेहनत करते हैं। स्वभाव सरल होता है और जीवन सफ़ल होता है। शारीरिक सुख पाने की इच्छा ज्यादा रहती है।

आर्द्रा नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव रुद्र और स्वामी मंगल है। मिथुन राशि और इस नक्षत्र में जन्में जातक कुशल राजनीतिक और कूटनीतिक होते है जो दुश्मन को धूल चटा देते है। ये गंदी राजनीति पसंद नही करते है।सीधी और सच्ची राजनीति करते है। झूठ नही बोलते हैं या पकड़ाते नही हैं। अपने कैरियर में आँच नही आने देते है।

पुनर्वसु नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव अदिति देवों कि माता और स्वामी गुरु है। इन लोगोंमें धार्मिकता ज्यादा होती है इस वजह से राजनीतिक गुण पाए जाते हैं। इनका स्वभाव सरल और उत्साही होते है। दुसरों का अहित करके खुद का हित नही करते हैं। इनमे कामेच्छा सीमित होती है। पत्नी के अलावा किसी से प्यार नही करते हैं। स्वार्थी होने के साथ-साथ प्यार करने वाले भी होते हैं।

मिथुन राशि तथ्य

भाग्यशाली दिन: बुधवार

भाग्यशाली संख्या: 5, 14, 23, 32, 41, 50

भाग्यशाली रंग: संतरा, नींबू, पीला

भाग्यशाली स्टोन : पुखराज, पन्ना

स्वामी ग्रह : बुध

सकारात्मक गुण: मानसिक प्रतिभा, कूटनीति, उत्साह, उत्साह चातुर्य, मजाकिया और बहुमुखी

नकारात्मक गुण: छलकपट करना, दुविधा की स्थिति, आलसी और गन्दा

स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं : मिथुन राशि के लोगों को मानसिक और तंत्रिका तंत्र में परेशानी आ सकती हैं। उन्हे श्वसन अंगों की भी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता हैं। उंगलियाँ, हाथ, और कंधों की भी मुसीबत आ सकती हैं।

कर्क राशि

कर्क राशि की प्रकृति :

कर्क राशि का प्रतीक केकड़ा हैं। आप बहुत भावुक हैं, हालांकि आप बाहर से बहुत कठोर नजर आते हैं कवच की तरह लेकिन आप अन्दर से बहुत नरम और संवेदनशील होते हैं। दूसरों के कठोर शब्द आपको आसानी से चोट कर सकते हैं। आप अक्सर अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं।

आप अपने परिवार के सदस्यों और करीबी दोस्तों के साथ शांति की तलाश में रहते हैं, लेकिन जल्द ही आपको यह एहसास हो जाता है कि ये सब केवल आपको अस्थायी खुशी प्रदान करते हैं। आपको उच्च, स्थायी खुशी काफी मायावय तरीके से मिल सकता हैं।आप परिवर्तनशील मूड से ग्रस्त रहते हैं। और जल्द ही अपना आपा ऐसी बातों में खो देते हैं जो दूसरों को तुच्छ लग सकता हैं।

आप अपने अतीत की बातों से इतने प्रभावित होते हैं कि जल्दी से जाने नहीं देते हैं। जो आपको भविष्य में अपने उद्देश्य की पूर्ति से रोकता हैं। यहाँ एक विरोधाभास हो सकता है, आप चालाक और नि: स्वार्थ एक ही समय में हो सकते हैं। आपको हास्य की एक गहरी समझ है, और जो बातें आप कहते हैं,आपके दोस्तो को हँसी से लोट पोट कर देता हैं। आप एक परिवारिक व्यक्ति हैं, और आप के लिए अपना घर दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण हैं।

कर्क नक्षत्र

पुनर्वसु नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव अदिति और स्वामी गुरु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातकों का शरीर भरावदार होता है। ये धार्मिक होते है। कोई भी काम केवल शुरु करने में उत्साही होते है। इनकी प्रवृत्ति हमेशा बदलती रहती है।

पुष्य नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव गुरु है और स्वामी शनि है। शारीरिक सुख अधिक रस होने की वजह से संतान की संख्या जयादा होती है। पुरुषत्व प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

अश्लेषा नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव नाग और स्वामी बुध है। इस नक्षत्र और कर्क राशि के जातक बहुत कोमल मन के होते हैं और इस कारण इनपे छोटी-छोटी बातों का भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

कर्क राशि तथ्य

भाग्यशाली दिन: सोमवार, गुरुवार

भाग्यशाली संख्या: 2, 7, 11, 16, 20, 25

भाग्यशाली रंग: नारंगी, सफेद

भाग्यशाली स्टोन : मोती, चंद्रमा स्टोन, रुबी

स्वामी ग्रह : चंद्रमा

सकारात्मक गुण: दृढ़, बेहद कल्पनाशील, वफादार, देशभक्ति, सहानुभूति पूर्ण, प्रेरक, तेजतर्रार, नाटकीय

नकारात्मक गुण: मूडी, निराशावादी, गुनगुनानेवाली जन्मे, संदेहास्पद

स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं : कर्क राशि के लोग भावनात्मक अवरोधों से ग्रस्त होते हैं। ये गैस्ट्रिक समस्याओं के लिए अतिसंवेदनशील हो सकते हैं। मोटापा भी प्रमुख चिंता हो सकती हैं। इन्हे भोजन के सेवन पर नियंत्रण रखना चाहिए।

सिंह राशि

सिंह राशि की प्रकृति :

सिंह राशि, राशि चक्र का पुरुष्त्व से भरपूर राशि चिह्न हैं। और शेर इसका प्रतीक हैं। आप शक्ति और महिमा फ़ैलाते हैं। आप जन्मजात नेता हैं, और सामाजिक सारोकार के लिए लोगो के साथ खड़े रहते हैं। हालांकि, आप अति उत्साह में कारवाई करने के लिए उत्सुक होते हैं और प्यार और सराहना की इच्छा से प्रेरित रहते हैं।

आप अव्यक्त शक्ति से भरपूर होते हैं और आप अपने शिकार को मात्र देख कर बुला सकते हैं। आप बहुत महत्वाकांक्षी हैं और अपने चुने हुए क्षेत्र में बहुत ऊपर तक पहुंचने का प्रयास करते हैं। समारोह करना पसंद होने के कारण आप ध्यान केंद्रित करना पसंद करते हैं।

आप बहुत भावुक हो सकते हैं, और आलोचना को हल्के में नहीं ले पाते हैं। विडंबना यह है कि आप कभी कभी अभिमानी हो जाते हैं और अन्य लोगों की भावनाओं को चोट पहुँचा सकते हैं।

हालांकि, आप नरम दिल के हैं और दूसरों को उनकी मुश्किलों से बाहर निकालने में मदद करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। रिश्तों में आप अपनी आजादी से समझौता नहीं कर सकते हैं। आप एक देखभाल करने वाले साथी साबित हो सकते हैं। आप सुंदर लोगों की ओर आकर्षित होते हैं और सुंदरता की सराहना करते हैं।

सिंह नक्षत्र

मघा नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव पितृ और स्वामी केतु है इसलिए इन जातको में दूरदृष्टि कम पायी जाती है। ये किसी से भी धोखा खा सकते हैं। भोले स्वभाव के होते हैं। इनके साथ फ़्रेक्चर और दुर्घटना होने की ज्यादा संभावना होती है।

पूर्वा फ़ाल्गुनी नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव सूर्य और स्वामी शुक्र है। इस कारण इनमें नियमितता का गुण पाया जाता है। इनमे संतुष्ट होने कि प्रवृत्ति कम पायी जाती है। इनकी पसंद ऊँची होती है। आत्मविश्वास कम और अहम ज्यादा पाया जाता है। ये आलसी होते है। भौतिक सुख संपत्ति और वैभवशाली जीवन जीना पसंद करते हैं।

उत्तरा फ़ाल्गुनी नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव आर्यमान सूर्य के भेद और स्वामी सूर्य है। सिंह राशि में पाए जाने वाले सारे सद्गुण इन जातको में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इस नक्षत्र के जातकों में दूरंदेशी पायी जाती है।

सिंह राशि तथ्य

भाग्यशाली दिन: रविवार

भाग्यशाली संख्या: 1, 4, 10, 13, 19, 22

भाग्यशाली रंग: गोल्ड, ऑरेंज, सफेद, लाल

भाग्यशाली स्टोन : हीरा, एम्बर, रूबी

स्वामी ग्रह : सूर्य

सकारात्मक गुण: उदार, आत्म जागरूक, अभिमानी, राजसी, आशावादी, प्रेमपूर्ण, कुलीन, वफादार

नकारात्मक गुण: हिंसक, अभिमानी, अधीर शेखी

स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं : सिंह राशि के लोगो को पीठ और दिल की बीमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं। एक दुखी सिंह राशि का जातक अवसाद ग्रस्त हो जाता हैं और इसके परिणाम स्वरुप ज्यादा खाने लगता हैं। जिससे पेट के मोटापे की समस्या और पीठ में दर्द हो जाता हैं।

कन्या राशि

कन्या राशि की प्रकृति :

कन्या राशि को कुंवारी कन्या द्वारा दर्शाया जाता हैं। जो पवित्रता को दर्शाता हैं। आप पाखंडी हो सकते हो पर हमेशा नहीं। आपमें अच्छे और बुरे को पहचानने की शक्ति हैं जो आपको भेदभाव करने वाला बनाता हैं।आप के अन्दर एक अलौकिक क्षमता हैं जिससे आप लोगों के गलत उद्देश्यों को भांप लेते हैं।

यह आपको दूसरों के साथ चौकस व्यवहार करने में मदद करता हैं। ऐसे तो आप निष्क्रिय रहते हैं,परन्तु जब स्थिति की मांग हो तो आप बहुत फ़ुर्ती से काम कर लेते हैं। आप साफ़ सफाई को लेकर सनकी हैं, जो दूसरों को परेशान कर सकता हैं।

यद्यपि आप बुद्धिमान हैं, लेकिन आप अपने दैनिक कामकाज को लेकर उलझन महसूस करते हैं। आप वास्तव में बहिर्मुखी नहीं हैं लेकिन आप नए संपर्क बनाने में अच्छे हैं।

आपकी जिम्मेदारी की गहरी भावना आपको अक्सर भारी तनाव में डाल देती हैं। आप भावुक हो सकते हैं, लेकिन आप शायद ही कभी अपनी भावनाओं को सार्वजनिक करते हैं और उन्हें अपने आप तक ही रखना पसंद करते हैं।

आप कई बार आलोचनात्मक हो जाते हैं जिससे आपके आस पास के लोगो के साथ तकरार हो सकता हैं। आप सबसे ज्यादा सफ़ाई पसंद हैं जिसके कारण आप के चारों ओर सब कुछ साफ और स्वच्छ हालत में होता हैं।

कन्या नक्षत्र

उत्तर फ़ाल्गुनी नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव आर्यमान और स्वामी सूर्य है। इनमें उत्साह की मात्रा संतुलित प्रमाण मे होती है। इन जातकों की कामेच्छा मध्यम होती है। कन्या राशि में पाए जाने वाले सारे गुण इन जातकों में पाए जाते हैं।

हस्त नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव सूर्य और स्वामी चंद्र हैं। आकर्षण शक्ति और कल्पना शक्ति इन जातकों में बडी मात्रामें होती है। साहित्य,संगीत और कला क्षेत्र में इन्हें रुचि रहती हैं। इन जातकों में गुण तो बहुत होते हैं परंतु असफ़ल होने का भय रहता है। ये बडी लगन से अपना काम करते हैं। ये सामनेवालेसे जितना प्रेम करते है उससे उतने ही प्रेम कि आशा रखते है।

चित्रा नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव विश्वकर्मा और स्वामी मंगल है। ये बहुत शौकिन मिजाज होते हैं। इनमे शिल्पकला और विविध कलाओं के प्रति रुचि होती है। नाटक और सिनेमा के भी शौकिन होते हैं। इनका मन बच्चो के जैसा होता है और ये बहुत शीघ्र रुठ जाते है। ये मान-सम्मान और प्रतिष्ठा को बहुत महत्व देते हैं।

कन्या राशि तथ्य

भाग्यशाली दिन: बुधवार

भाग्यशाली संख्या: 5, 14, 23, 32, 41, 50

भाग्यशाली रंग: नारंगी, सफेद, ग्रे, पीला

भाग्यशाली स्टोन : पुखराज

स्वामी ग्रह : बुध

सकारात्मक गुण: व्यवस्थित, विश्लेषणात्मक, अभिव्यंजक,शांत

नकारात्मक गुण: गंभीर, झगड़ालू, दुराराध्य, संकीर्ण

स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं : कन्या जातक अक्सर आंतों और पेट के साथ समस्याओं के साथ जुड़े रहे हैं। आंत्र रोग, अपच, पेट का दर्द और आंत्र संक्रमण आदि अनुचित तनाव और घबराहट की वजह से हो सकता है। अनिद्रा भी एक मुद्दा हो सकता हैं।

तुला राशि

तुला राशि की प्रकृति :

तुला संतुलन और ऊर्जा के विशाल भंडार का सूचक हैं। चूंकि आप राशिचक्र के सातवें घर में आते हैं और आपका चिह्न तुला हैं। आपकी चेतना में भी हर समय यह व्याप्त रहता हैं कि आप

के चारों ओर सब कुछ कैसे संतुलन में रखा जाए,फ़िर चाहे वह घर हो या अपने काम की जगह।आप हर समय सामंजस्य की तलाश में रहते हैं। और बहुत व्यावहारिक समाधान निकालते हैं।

और, क्योंकि आप बहुत ऊर्जावान हैं, आप बहुत फ़ुर्ति से कार्य करते हैं और् इस चक्कर में अपने आप को इतना थका देते हैं आप जल्दी से क्रोधित हो जाते हैं।

आपका मूड हमेशा चढ़ते उतरते रहता हैं। कभी कभी आप बहुत ही सकारात्मक रूप में रहते हैं जैसे सहायक, हर्षित, और मैत्रीपूर्ण, जबकि अन्य समय आपके चारो ओर अंधेरी आभा मंडराने लगती हैं, और ऐसे समय में आप पूरी तरह से नकारात्मक हो जाते हैं और दूसरों के दर्द के प्रति बहुत असंवेदनशील हो जाते हैं।

यद्यपि आपमें पर्याप्त क्षमता हैं कि आप स्थिति के अनुसार अच्छा प्रदर्शन करें। आप अक्सर अन्य अवसरों की तलाश में अपनी एकाग्रता खो देते हैं। संक्षेप में, आप एक बुद्धिमान इंसान हैं। और आपके आसपास होना आनन्द दायक हो सकता हैं। स्वाभाविक रूप से, आप एक श्रेष्ठ मेजबान हो सकते हैं।

तुला नक्षत्र

चित्रा नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव त्वाशतव और स्वामी मंगल है। इस नक्षत्र के जातक शौकीन मिजाज होते हैं। अनेक विषयों में शौक होने के कारण किसी एक विषय में ध्यान केंद्रित नही कर पाते हैं। घुमने-फ़िरने, कपड़ा, नाटक, सिनेमा और खाने-पीने का शौक होता है।

ये बहुत चंचल होते हैं। इनसे सफ़लता की आशा कर सकते है पर ये ज्यादा मानसिक मेहनत नही करना चाहते है।

स्वाति नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव वायु और स्वामी राहु है। इस राशि के जातकों में एकाग्रता और सफ़ल होने के गुण पाए जाते हैं। ये अपना लक्ष्य निर्धारित करकेही आगे बढ़ते है। तुला राशि के सारे गुण इस नक्षत्र के जातकों में पाए जाते हैं। ये भाग्यवान होते हैं।

विशाखा नक्षत्र :

इस नक्षत्र के देव इन्द्र-अग्नि है और स्वामी गुरु है। तुला राशि और इस नक्षत्रमें जन्म लेने वाले जातकों में सफ़लता कम पायी जाती है। ये हमेशा मुश्किलों में घिरे रहते हैं। ये कम शौकीन होते हैं। इनके मन में हमेशा विरोधाभाषी विचार चलते रहते हैं अत: ये दुविधा में रहते हैं। शारीरिक सुख की इच्छा में भी दुविधा में रहते है अत: लाभ नही उठा पाते हैं।